P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-7* March- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

हिन्दी साहित्य पर गांधी जी का प्रभाव

ऋषिपाल
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता कॉलेज,
कौल, कैथल, हरियाणा, भारत

सारांश

महात्मा गांधी जी हमारे देश के लोक नायक व युग–निर्माता ही नहीं थे, बल्कि संसार के युग महापुरुषों में से एक थे। उन्होंने न केवल भारत देश को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराया बल्कि समस्त संसार में सत्य, अहिंसा, शांति और सद्भाव के आदर्श एवं नैतिक मूल्यों से अवगत कराकर समस्त मानवता के कल्याण और सर्वोदय की स्थापना की। पूरे विश्व में लोगों ने उन्हें देखा, सुना, पढ़ा, सहमत, असहमत हुए, उनका तीव्र समर्थन किया, उनका घोर विरोध किया किन्तु प्रेम और श्रद्धा उन्हें जितनी मिली, उतनी विश्व में किसी एक व्यक्ति को नहीं मिली, क्योंकि उनके विरोधी भी उन्हें एक व्यक्ति के रूप में प्रेम करते रहे हैं।[1] उनका व्यक्तित्व विविधता और विचित्रता के साथ एकरूपता एवं अनुशासन को इस प्रकार संजोए हुए था कि उनके व्यक्तित्व और विचारों के विरोधाभास का चमत्कारी सह–अस्तित्व सर्वथा सहज प्रतीत होता है।[2]

मुख्य शब्द : महात्मा गांधी, हिन्दी साहित्य, नैतिक मूल्य।

प्रस्तावना

गांधी जी के आदर्शों एवं जीवन मूल्यों का उद्देश्य वर्तमान में भारत ही नहीं अपितु समस्त संसार के लिए नितान्त उपयोगी है। वे मानते थे कि हिंसा न केवल सामाजिक व्यवस्था की वास्तविक क्रान्ति में बाधा डालती है बल्कि मानव जाति को सर्वनाश की ओर ले जाती है। बहुत से लोग आज भी उनके आदर्शों और सिद्धान्तों में आस्था रखते हुए साहसपूर्वक ऐसा जीवन जीने का प्रयत्न करते दिखते हैं जो गांधी जी की जीवन पद्धति के अनुरूप है और उन मूल्यों का समर्थन करते हैं जो गांधी को प्रिय थे।[3] उन्होंने गांव की दशा सुधारने के लिए व भारत वर्ष की गरीबी को दूर करने के लिए किसानों के लिए उत्तम खेती व गृह उद्योगों को नितान्त आवश्यक माना है। उनके दिल में गांवों/देहातों के लिए अटूट प्रेम था। वे मानते थे कि खेती और कुटीर उद्योगों के माध्यम से गांव के लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी हो सकती है। गांधी जी समस्त मानवजाति के कल्याण के लिए आजीवन प्रयासरत रहे। उन्होंने सत्य और अहिंसा पर आधारित आदर्श राज्य 'रामराज्य' की स्थापना के लिए परिकल्पना की थी। इसीलिए गांधी जी ने सत्य और अहिंसा सम्बन्धी प्रयोग करके मनुष्य का आचरण बदलने का प्रयास किया। उन्होंने कहा भी था कि ''सच्ची अहिंसा मृत्युशैया पर भी मुस्कराती रहेगी। अहिंसा ही वह एकमात्र शक्ति है जिससे हम शत्रु को अपना मित्र बना सकते हैं और उसके प्रेमपात्र बन सकते हैं।''[4] गांधी जी प्रायः अपने साथ गीता की पुस्तक रखते थे। गीता उनकी प्रिय पुस्तक थी। गांधी जी के आचरण में गीता बड़े ही सरल और सार्थक रूप से आत्मसात हुई दिखाई देती थी। भारत देश को आजाद कराने के लिए उन्होंने आजीवन संघर्ष किया। वे लोगों के मन में सत्य, अहिंसा, प्रेम, शांति, एकता, सद्भाव, समानता व मानवता की भावना पैदा करने के लिए प्रयासरत रहे। गांधी जी के आदर्शों का प्रभाव आधुनिक हिन्दी साहित्य की समस्त विधाओं पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है। हम सभी जानते हैं कि भारतीय सनातन संस्कृति सत्य, अहिंसा, सद्भाव, शांति, सर्वधर्म सम्भाव, समानता की पक्षधर रही है। जिस प्रकार 'रामचरितमानस' एवं 'रामायण' में श्रीराम के चरित्र को आदर्श माना गया है व आदर्श राज्य की कल्पना की गई है, ठीक उसी प्रकार गांधी जी ने भी श्रीराम से प्रभावित होकर भारत देश में रामराज्य की परिकल्पना की थी। यही कारण था कि आजादी के आन्दोलन में उन्होंने हिंसा को त्यागकर अहिंसा के रास्ते पर चलने पर जोर दिया है। उनके सत्य, अहिंसा, शांति, प्रेम, एकता के आदर्शों का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। गांधी जी के आदर्शों से प्रेरित होकर अनेक हिन्दी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में आदर्श चरित्रों को स्थान दिया। हम अनेक राष्ट्रवादी कवियों जैसे मैथिलीशरण गुप्त व प्रेमचन्द जैसे कथाकारों के साहित्य में गांधी जी के चिन्तन दर्शन, राष्ट्र निर्माण व स्वराज की कल्पना को

स्पष्ट देख सकते हैं। समाज साहित्य का और साहित्य समाज का दर्पण होता है। तत्कालीन स्वाधीन भारत में अनेक राष्ट्रीय आन्दोलनों को गांधी जी ने शांति व अहिंसा के साथ चलाया। स्वाभाविक है तत्कालीन अनेक साहित्यकारों ने गांधी जी के आदर्शों एवं मूल्यों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति देकर साहित्य को समृद्ध किया।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य हिन्दी साहित्य पर गांधी जी का प्रभाव का अध्ययन करना है।

विषय विस्तार

गांधी जी सत्य के अन्वेषी हैं। सत्य की उपलब्धि के लिए ही वे विविध कार्यों में अपनी शक्ति का नियोग करते हैं। उनका आग्रह है कि प्रत्येक व्यक्ति को सत्याग्रही होना चाहिए।[5] गांधी जी के सत्य के प्रभाव को हम जैनेन्द्र की 'वे तीन', 'एक रात', 'फांसी', 'पाजेब', 'वातायन' कहानी में ही नहीं अपितु 'सुनीता' नामक उपन्यास में भी देख सकते हैं। गांधीवादी दृष्टिकोण सत्य के प्रति हमें विष्णु प्रभाकर की 'वापसी' कहानी में स्पष्ट दिखाई पढ़ता है। इस कहानी में राम सिंह ईर्ष्या, द्वेष के कारण चाहता है कि ''मैं उसके परिवार को दर–दर की भीख मंगवाऊँगा, भिखारी बनाऊँगा।'' परन्तु उसको जब सच्चाई का पता चलता है तब वह अपनी जान पर खेल कर घर में लगी आग में से अपने सौतेले भाइयों को बचाने में सफल हो जाता है। उसके मन में इस प्रकार का बदलाव गांधी जी के सत्यवादी दृष्टिकोण का ही परिणाम है। इसी प्रकार का उदाहरण कुमार बख्शी की 'कौडियों का नाच' कहानी में भी मिलता है। नंद कुमार इस कहानी का प्रमुख पात्र एक प्रतिष्ठित परिवार से सम्बन्ध रखता है। भारत विभाजन के समय में साम्प्रदायिक हिंसा की आग सर्वत्र फैल चुकी थी। सन् 1947 के उन दंगों में वह अपना सर्वस्व लुटा हुआ पाकर असत्य के रास्ते की ओर अग्रसर होता है। लेकिन उसकी माँ उसे गांधी द्वारा सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। गांधी जी ने अहिंसा को परम कर्तव्य माना है। गांधी जी मानते थे कि मानवीय सम्बन्धों की सभी समस्याओं का एकमात्र हल अहिंसा ही है, अहिंसा हिंसा से अधिक शक्तिशाली है। अहिंसा एक दूसरे के प्रति प्रेम और आदर को जन्म देती है तथा सभी मनुष्यों को समान समझने की प्रेरणा देती है।[6] उनकी अहिंसा में वैचारिक सावधानी भी अत्यन्त जरूरी है।

गांधी जी के अनुसार केवल दूसरों की वस्तु को बिना उसकी आज्ञा के हर लेना ही चोरी नहीं है बल्कि अनावश्यक वस्तु का परिग्रह एवं भविष्य में आवश्यक हो सकने वाली वस्तु को प्राप्त करने की चिन्ता भी चोरी है।[7] गांधी जी के परिग्रह का प्रभाव आधुनिक हिन्दी साहित्य के कहानीकार दामोदर सदन द्वारा लिखित कहानी 'मेजर श्री नाथ की वसीयत' व नवनीत मिश्र द्वारा रचित कहानी 'छाया मत छूना' में दिखाई पड़ता है। गांधी जी का समाजवाद उनके लिए सहज है, किसी किताब से उधार लिया नहीं है।[8] उन्होंने समाज सुधार की दिशा में तत्कालीन परिस्थितियों को समझकर अनेक सफल प्रयास किए। सुधार नहीं उद्धार, हरिजनोद्धार, साम्प्रदायिक एकता व मद्यपान निषेध सम्बन्धी आदि उनके विचार उल्लेखनीय व अनुकरणीय हैं। देखा जाए तो गांधी जी के स्वराज्य का सार्थक एवं सटीक प्रभाव मुंशी प्रेमचन्द के साहित्य पर सशक्त रूप से पड़ता है। प्रेमचन्द के 'महाजनी सभ्यता' लेख में इसका सुन्दर उल्लेख मिलता है – ''धन्य है वह समता जो मालदारी और व्यक्तिगत सम्पत्ति का अंत कर रही है ..... पर जो सत्य है एक दिन उसी की विजय होगी।'' प्रेमचन्द के प्रसिद्ध उपन्यास गबन में भी नेता पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं – तुम सुराज का नाम लेते हो, उसका कौन रूप तुम्हारे सामने आता है .... जब तुम्हारा राज हो जायेगा तब तुम गरीबों का खून पी जाओगे।'' इसी प्रकार कथाकार विष्णु प्रभाकर की प्रसिद्ध कहानी 'सुराज' में आजादी के बाद का संघर्ष 'धरोहर' कहानी में बंगाल के अकाल का दर्द 'आजादी' कहानी में गांधी जी द्वारा भारत देश को आजाद कराने का संघर्ष 'मेरा वतन' में राष्ट्र के प्रति प्रेम व 'भारत माता की जय' में समाज में व्याप्त हिंसा के वर्णन में गांधी जी का समाजवादी दृष्टिकोण दिखाई पड़ता है। गांधी जी सभी प्राणियों को एक ही ईश्वर के जीव मानते थे। उन्होंने अस्पृश्यता निवारण का संकल्प लिया था। गांधी जी के हरिजनोद्धार का प्रभाव लक्ष्मी नारायण की कहानी 'आने वाला कल' में दृष्टिगोचर होता है। सोमा वीरा की प्रसिद्ध कहानी 'अंगूठी' में वे लिखते हैं कि 'जलपान कर लेते तो तुम्हारी जाति चली जाती। पर मेरे देह का स्पर्श करने से तुम जाति च्युत न हुए।'' गांधी जी ने स्त्री जाति के उत्थान, प्रगति, अशिक्षा, दहेज आदि को आजादी की राह में बाधा माना है। कथाकार सोमा वीरा ने अपनी प्रसिद्ध कहानियों 'अधूरी गांठ' व 'राख की पुड़िया' में समाज को व्याप्त दहेज की बुराई की निंदा की है। रामेश्वरी की कहानी 'आँखों का कौतुक' में दहेज की पीड़ा को उजागर किया है। 'निर्मला' उपन्यास में प्रेमचन्द ने दहेज के कारण अनमेल विवाह की समस्या को उजागर किया है। वेश्यावृति की समस्या का उल्लेख 'सेवा सदन' में मिलता है। अनेक कथाकारों जैसे इलाचन्द्र जोशी, विष्णु प्रभाकर, उपेन्द्र नाथ अश्क आदि ने अपनी रचनाओं में समाज में व्याप्त वेश्यावृति को उजागर किया है।

गांधी जी ने जीवनभर भारत राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए अथक परिश्रम किया, राष्ट्र भाषा, राष्ट्रीय शिक्षा और राष्ट्रीय एकता पर बल दिया। यह सब कुछ इसलिए किया क्योंकि उनके शब्दों में, ''मैं अपने देश की स्वतन्त्रता इस कारण चाहता हूँ कि अन्य राष्ट्र मेरे राष्ट्र से कुछ सीख सकें।[9] उनका यह प्रभाव विनोद शंकर व्यास के 'स्वराज कब मिलेगा' रचना में मिलता है। गांधी जी के प्रभाव से राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत विष्णु प्रभाकर की 'खंडित पूजा' व 'नागफांस' कहानी भी वर्णनीय है। प्रेमचन्द के उपन्यासों गोदान, कर्मभूमि, गबन, कायाकल्प आदि में किसान जीवन की दयनीय स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है जो कि गांधी जी के बहुजन हिताय व ग्राम स्वराज्य के आदर्श का प्रभाव ही माना जाएगा। फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा 'मैला आंचल' उपन्यास भी गांधी के स्वराज की भावना की पुष्टि करता है।

गांधी जी के सिद्धान्तों, नैतिक मूल्यों व आदर्शों को हम कथा साहित्य के साथ–साथ कविताओं में भी उतनी ही सशक्त रूप से देख सकते हैं। मैथिलीशरण

गुप्त द्वारा रचित 'भारत–भारती' में गांधी जी के आदर्शों का प्रभाव हम देख सकते हैं। वे लिखते हैं कि –

श्री गोखले, गांधी सदृश नेता महामतिमान है,
वक्ता विजय घोषक हमारे श्री सुरेन्द्र समान है।

गांधी जी के आदर्शों का आधुनिक कविताओं पर प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान भी गांधी जी के धर्मनिरपेक्ष समाज के निर्माण की कल्पना से प्रभावित होती दिखाई देती है। अनेक स्थलों पर उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति एवं सद्भाव की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है –

मेरा मन्दिर, मेरी मस्जिद, काबा–काशी यह मेरी,
पूजा पाठ, ध्यान, जप–तप है घट–घट वासी यह मेरी।

वे लिखती हैं –

प्रभु ईसा की क्षमाशीलता, नबी मुहम्मद का विश्वास,
जीव दया जिन पर गौतम की आओ देखो इसके पास।

भवानी प्रसाद ने गांधी जी से प्रभावित होकर 'गांधी पंचशती' नामक रचना लिख डाली। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपनी कविता 'तुम युग परिवर्तन कालेश्वर' में गांधी के बारे में लिखा कि –

रंग प्रभावित किया नहीं जन के मन को
सात्विकता ने तुम और ईसा,
सुकरात सभी, कर गए प्राण उत्सर्ग,
यहां पर जन बौना ही रहा और,
उतरा न भूमि पर स्वर्ग।

महादेवी वर्मा भी गांधी जी के बारे में कविता के माध्यम से लिखती हैं कि –

हे धरा के अमर पूत, तुमको अशेष प्रणाम।
जीवन के अजस्त्र प्रणाम, मानव के अनंत प्रणाम।

कवि सोहन लाल द्विवेदी भी गांधी जी को सम्मान देते हुए लिखते हैं कि –

''ठहरो, चिता लगाव मत, ओ निर्मम देश महात्मा की,
एक बार फिर चरण धूलि, ले लेने दो पुण्यात्मा की।''

जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में संयम रखना अपेक्षित है। उनकी अहिंसा की अवधारणा मन, वचन, कर्म से सम्बन्धित है।[10] गांधी जी के अहिंसा का प्रभाव विनोद शंकर व्यास की 'स्वराज कब मिलेगा?' नाम कहानी में दिखाई पड़ता है। आनन्द प्रकाश जैन की 'देवताओं की चिंता' कहानी में अहिंसा की अनिवार्यता स्पष्ट देखी जा सकती है। चैतन्य भट्ट की कहानी 'रंग में भंग' में अहिंसा का सुन्दर उल्लेख मिलता है जिसे हम गांधी की अहिंसा का प्रभाव ही मान सकते हैं ''साधारण नियम तो यह हेना चाहिए कि पशु हिंसा त्याज्य है ही, यज्ञानुष्ठान में तो यह कदापि नहीं होना चाहिए।'' गांधी जी ने धर्म के क्षेत्र में संसार के प्रत्येक कार्य, व्यक्ति के प्रत्येक पक्ष और समाज के प्रत्येक कार्य, व्यक्ति के प्रत्येक पक्ष और समाज के प्रत्येक अंग को समेटा। वे मूर्तियों को देवता मानना अनुचित समझते थे, किन्तु ईश्वर के प्रतीक या माध्यम के रूप में मूर्ति–पूजा से उनका कोई विरोध नहीं था। गौ–पूजा में उन्हें जीवन मात्र के प्रति दया या अहिंसा का भाव निहित प्रतीत होता था।[11] उनके अनुसार धर्म मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य है, आत्म दर्शन भी है व सभी धर्मों का सामंजस्य भी है। उनके इन आदर्शों का प्रभाव विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित कहानी 'उस दिन' की नायिका मंजू के व्यवहार में मिलता है। वह हिंसा व आक्रोश से भरपूर माहौल में एक मुसलमान बच्चे को स्वयं के घर में रखकर मानवीय उदारता का परिचय देकर धर्म की पालना करती है। इसी प्रकार का उदाहरण राधेलाल विजधावने 'अमृत' की कहानी में दृष्टिगोचर होता है। उनकी 'एक सूत्र' कहानी की फरीदा की शादी साम्प्रदायिक हिंसा के कारण नहीं हो पाती, तब उसका मामा कहता है कि 'क्या कोई भी धर्म सम्प्रदाय इंसानियत का गला घोटने की अनुमति देता है? गांधी जी ने जीव को ईश्वर का ही अंश माना है। स्वरूप कुमार बख्शी के 'निर्झर कन्या' कहानी संग्रह की दो कहानियाँ 'बुलबुल' और 'जीवन की सात समस्याएँ' भी गांधी जी की इसी धारणा से प्रभावित होकर चरितार्थ दिखाई देती है। गांधी जी के अनुसार धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है। इसका अर्थ है – सृष्टि के व्यवस्थित नैतिक शाासन के प्रति आस्था।[12]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि आधुनिक हिन्दी साहित्य पर गांधी जी का प्रभाव पूरे वर्ग व परिशुद्धता के साथ पड़ा है। गांधी जी ने राष्ट्रीय चेतना का बिगुल हिन्दी के माध्यम से बजाया व हिन्दी को समस्त भारत देश की वाणी भी बनाया। जिस कारण से हिन्दी के साहित्यकारों पर गांधी जी का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। गांधी जी सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति, समानता व मानवता की भावना को जागृत करने के लिए प्रयासरत रहे। वे समाज में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं देखना चाहते थे। सभी भारतवासी प्रेम से एकता के साथ जीवन यापन करें, ऐसा समाज वे स्थापित करना चाहते थे। इसलिए उनके आदर्शों, विचारों, मूल्यों को अधिकांश साहित्यकारों ने आत्मसात करके अपने साहित्य में व्यक्त किया। फलतः उनके विचारों से अभिभूत होकर अनेक कथाकर प्रेमचन्द, रेणु, जैनेन्द्र, विष्णु प्रभाकर आदि ने अपनी रचनाओं में उनके सिद्धान्तों से अनुप्राणित होकर साहित्य का सृजन किया। आधुनिक कवियों ने भी जैसे मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, भवानी प्रसाद मिश्र, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि ने भी गांधी जी के आदर्शों से प्रभावित होकर अपने साहित्य का सृजन किया।

अंत टिप्पणी

1. *डॉ. प्रभात कुमार भट्टाचार्य : गांधी दर्शन, पृ. 01*
2. *प्रताप सिंह, गांधी जी का दर्शन, पृ. 03*
3. *रजनी शर्मा, गांधी का जीवन, गांधी का संदेश (योजना : अक्तूबर 1981, पृ. 25)*
4. *वही, पृ. 26*
5. *महादेव प्रसाद, महात्मा गांधी का समाज दर्शन, पृ. 30*
6. *प्रताप सिंह, गांधी जी का दर्शन, पृ. 34*
7. *'फ्राम यरवदा मन्दिर', पृ. 31–35*
8. *'हरिजन', 20 अप्रैल 1940*
9. *रामनाथ सुमन, गांधीवाद की रूपरेखा, पृ. 45–46*
10. *शम्भू रत्न त्रिपाठी, गांधी धर्म और समाज, पृ. 37*
11. *वही, पृ. 22*
12. *डॉ. प्रभात कुमार भट्टाचार्य, वही, पृ. 28*